

यज्ञ चिकित्सा विज्ञान
द्वारा
आश्चर्य जनक लाभ

स्वर्गीय पूज्य पिता
श्री स्वामी
चैतन्यदेवजी महाराज
(साधु सत्यानन्दजी
धर्म सेवक)
देवास (म. प्र.)
की
पुण्य-स्मृति
में
प्रकाशित



पं. वीरसेन वेदश्रमी
वेद सदन
महारानी पथ,
इन्दौर-४५२ ००७

卐 ओ३म् 卐

"सर्वेभ्यो हि कामेभ्यो यज्ञः प्रयुज्यते"

[कृष्ण यजुर्वेदः]

-★-

यज्ञ से सब कामनाओं की पूर्ति

समस्त लौकिक एवं पारलौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए यज्ञ का प्रयोग होता है। यजुर्वेद अध्याय १८ में जहां बहुत सी कामनाओं की पूर्ति के लिए यज्ञ की सामर्थ्य का उल्लेख है वहां-अयक्ष्मं च मे अनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (१८।१६) का भी उल्लेख है। अर्थात् मेरा यक्ष्मादि रोगों से रहित शरीर आदि और रोग विनाशक कर्म, मेरा रोगादि रहित और इसकी सिद्धि करने वाली ओषधियाँ, मेरा जिससे जीते हैं या जो जीवन प्रदान करता है वह व्यवहार और पथ्य भोजन, मेरा अधिक आयु का होना आदि यज्ञ से सामर्थ्यवान् बने। इस प्रकार वेद ने आरोग्यता निमित्त, रोग निवारण के लिये एवं जीवन वृद्धि के लिये यज्ञ करने का उपदेश दिया है।

यज्ञ से रोगमुक्ति

अथर्ववेद, काण्ड ३, सूक्त ११ के मन्त्र में कहा है- मुंचामित्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्-अर्थात् तुझ रोगी को मैं जीवन के लिये ज्ञात एवं अज्ञात रोगों से यज्ञ में हवि प्रदान के द्वारा रोगमुक्त करता हूं। अर्थात् सभी प्रकार के प्रकट या अप्रकट रोगों की मुक्ति का साधन यज्ञ है। अतः यज्ञ, चिकित्सा का परम श्रेष्ठ साधन है और इसका उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में बाहुल्य से होना चाहिये।

रोगी यज्ञ अवश्य करें

प्राय: समर्थ रोगी अपनी चिकित्सा के लिये देश–विदेश में जाते हैं। ऐसे व्यक्ति यदि यज्ञ का भी प्रयोग करें तो उनको अति शीघ्र लाभ होगा ही और बहुत से व्यय से भी बच सकते हैं तथा उनके यज्ञ से औरों को भी लाभ हो सकता है।

यज्ञ की वायु रोग विनाशक

आयुर्वेद के ग्रन्थों में धूनि, धूम्रादि के अनेक प्रयोग रोगों की निवृत्ति के लिये ऋषियों ने लिखे हैं। वर्तमान समय की चिकित्सा प्रणाली में कठिन एवं चिन्तनीय स्थिति में प्राणवायु (आक्सीजन) देने की प्रणाली वायु-चिकित्सा का ही एक अंग है।

रोग-चिकित्सा के लिये औषधि सेवन, इन्जेक्शन आदि का बहुत प्रचार है। खाने की औषधियों से अधिक एवं शीघ्र प्रभाव इन्जेक्शनों का होता है। परन्तु यज्ञ द्वारा रोगी को वायु के माध्यम से श्वास-प्रश्वास द्वारा स्वाभाविक रूप से औषधितत्व अधिक प्रभावशाली रूप में अतिशीघ्र, आश्चर्यजनक रीति से लाभ करता है और जो रोग वर्षों से घर किये हुए हैं वे भी बहुत अंशों में निवृत्त हो जाते हैं ऐसा हमारा अनुभव है।

यज्ञ द्वारा अनेक रोगियों को लाभ

यज्ञ द्वारा रोगियों को जो आश्चर्यजनक लाभ हमारे द्वारा हुए उनको समय-समय पर हमने समाचार पत्रों द्वारा प्रकाशित भी किया। सन् १९७८के मार्च मास में एक भेषज यज्ञ केवल रोगियों के लिये ही आर्यकन्या आयुर्वेद महाविद्यालय वड़ौदा में किया। श्री पं० आनन्द प्रियजी के वेद, यज्ञ एवं आयुर्वेद के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम के कारण ८ दिवस के लिये परीक्षाणार्थ यह यज्ञ आयोजित हुआ

था। लगभग २१९ रोगी दूर-दूर से आये थे। जिस रोगी ने जितने अधिक दिन यज्ञ में भाग लिया उनको उतना ही अधिक लाभ भी हुआ था।

अब इस लघु पुस्तिका द्वारा दि० २६ नवम्बर १९७९ से दि० ७ दिसम्बर १९७९ तक १२ दिवस का जो वृष्टि यज्ञ आर्य उपप्रतिनिधि सभा भरतपुर की ओर से हुआ था, उसमें प्रमुख रूप से २ रोगियों को चिकित्सार्थ स्थान दिया गया था उन पर यज्ञ का जो अद्भुत प्रभाव रोग निवृत्ति के लिये हुआ, उसका विवरण यहां प्रस्तुत है। आशा है इससे प्रेरणा प्राप्त कर जन साधारण यज्ञ को भी अपनावेगें और लाभान्वित होंगे तथा-आयुर्यज्ञेन कल्पताम् (यजुः १८/२९) के अनुसार यज्ञ द्वारा अपने जीवन को आयु, आरोग्य एवं ऐश्वर्य से समर्थ बनावेगें।

वेद सदन
महारानी पथ,
इन्दौर–४५२ ००७

निवेदक
वीरसेन वेदश्रमी
मकर संक्राति, १५ जनवरी १९८०



卐 ओ३म् 卐

यज्ञ चिकित्सा - विज्ञान द्वारा आश्चर्यजनक लाभ

यज्ञ द्वारा चिकित्सा से अद्भुत लाभ शीघ्र होता है । अभी २६ नवम्बर से ७ दिसम्बर, १९७९ तक भरतपुर में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वृष्टि यज्ञ के लिये मुझे आमन्त्रण प्राप्त हुआ था। इस यज्ञ के अवसर पर मैंने कहा कि यज्ञ का लाभ अनेक रोगों के निवारण के लिये भी आश्चर्यजनक होता है, अतः जिनको रोग हैं, यदि वे व्यक्ति यज्ञ में नियमित रूप से सम्मिलित होकर स्वाहा की उच्च स्वर से ध्वनि करेंगे तो उन्हें लाभ अवश्य होगा ।

प्रथम रोगी

तीसरे दिन दिनांक २८ नवम्बर को सभा के मन्त्री श्री पं० हरगोविन्दजी शर्मा ने श्री पं० केदारनाथ शर्मा को उपस्थित किया। ३० वर्ष का, ग्राम जिरौली, पोस्ट सोंख, जिला मथुरा का यह निवासी था। उसे यज्ञ में बैठाया गया ।

रोगी की दशा

६ वर्ष पूर्व एक दिन वह सायकिल से घर पहुंचा। पसीने में तर था। उसे हवा लग गई। वाताघात से चलने, बोलने और हाथ से कार्य करने में असमर्थता हो गई। लड़खड़ा कर बहुत कठिनता से लाठी के सहारे चलता था। वाणी भी अस्पष्ट थी। हाथों से भी कार्य ठीक रीति से करने में असमर्थ था। इसकी चिकित्सा उसने दिल्ली, आगरा, भरतपुर, आदि के अस्पतालों में तथा और भी अनेक स्थानों पर कराई परन्तु कुछ भी लाभ नहीं हुआ ।

प्रथम उपचार - आचमन

उसकी स्थिति देख कर यज्ञशाला के समीप में स्थित हारसिंगार के कुछ पत्ते मैं लाया। ३ पत्तों को पानी के साथ हाथ से ही मर्दन कर आचमन पात्र के जल में उसके रस को मिश्रित कर दिया। यज्ञ के प्रारम्भ एवं अन्त में ३-३ आचमन उस जल से ब्रह्मतीर्थ द्वारा मन्त्र पूर्वक कराये गये। यज्ञ दिन में तीन बार होता था। अतः एक दिन में १८ आचमन यज्ञ में एवं सायं संध्या के अवसर पर ६ आचमन इस प्रकार २४ आचमन मन्त्र पूर्वक इस जल के उसे प्रतिदिन प्रारम्भ कराये गये। मन्त्र एवं यज्ञ भावित जल अमृत हो जाता है। अतः - **ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा** से आचमन का विधान ऋषियों ने किया है।

द्वितीय उपचार-प्रतपन

प्रति सवन के यज्ञ के अन्त में यज्ञशेष घृत थोड़ा सा हाथ में लेकर हारसिंगार के ही २–३ पत्तों को उसे हथेली में मर्दन करने को दिया जाने लगा। मर्दन के पश्चात्–**तनूपाअग्नेसि.** यजुर्मन्त्रादि से यज्ञाग्नि से हथेलियों का प्रतपन एवं उसका अंगों पर स्पर्श एवं अभिमर्शन कराया जाता था। यज्ञशेष घृत एवं अन्न भी अमृत हो जाता है। अतः इनके द्वारा अद्‌भुत दिव्य गुणों का समावेश रोगी में हो जाता है जिससे रोग शीघ्र शमन होने लगता है।

हव्य द्रव्यों से संस्कारित घृत

यज्ञ शेष घृत में आहुतियों के प्रभाव से रोगनाशक सामर्थ्य विशेष हो जाती है। हव्य द्रव्यों के धूम का प्रति घृताहुति से आहुति चम्मच या स्रुवा पर संस्कार होता है और वह स्रुवा पुनः पुनः घृत पात्र के घृत से सम्पर्क करता है। इस कारण आहुति भावित चम्मच का प्रभाव घृत में उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो जाता है

और उसकी रोग विनाशक शक्ति बढ़ जाती है। इस संस्कारित घृत का हथेलियों में मर्दन कर उसे यज्ञाग्नि से तप्त कर अंगों पर लगाने से रोग शीघ्रातिशीघ्र दूर हो जाते हैं।

तृतीय उपचार-प्रणायाम

इस अभिर्शन एवं स्पर्श क्रिया के पश्चात् पुनः हथेलियों का घर्षण करके तथा यज्ञाग्नि से प्रतपन कर उन हाथों को विधि विशेष से मुख पर आच्छादन पूर्वक तीन प्राणायाम प्रति समय के यज्ञान्त में मी कराये गये। इस प्रकार प्रति दिन कुल नव प्राणायाम कराने से रोगी में दिव्य नव प्राणों का संचार होता है। आरोग्यता प्राप्ति में प्राणों का ही महत्व है। प्रति प्राणायाम से पूर्व हथेलियों को मर्दित कर के उष्णता का संचार कर उन्हें यज्ञाग्नि से प्रतप्त करना आवश्यक है।

चतुर्थ उपचार-यज्ञान्त आमचन

पूर्वोक्त क्रिया के पश्चात् आचमन क्रिया विशेष मन्त्रों से कराई जाती थी। इस आचभन का प्रभाव भी विशेष इसलिये होता है कि हाथ में हव्य द्रव्य एवं यज्ञ शेष घृत का घर्षण कर यज्ञाग्नि से प्रतप्त कर स्थिर एवं प्रभावशाली किया गया है, उस हथेली में जो यज्ञ भावित जल यज्ञशाला में उपस्थित है उस पर और भी अधिक रोगनिबारक प्रभाव उत्पन्न हो जाता है तथा आरोग्य वृद्धि का हेतु बन जाता है। इस आचमन क्रिया के पश्चात् रोगी को ३ ग्राम नारसिंह चूर्ण यज्ञ शेष घृत के साथ सेवन भी कराया जाता था।

प्रभाव एवं लाभ

तीन दिन में ही उसके ऊपर प्रभाव लोगों को दृष्टिगोचर होने लगा। वह यज्ञ कुंड की परिक्रमा २-३ दिन लाठी के सहारे लगाता

रहा। ३-४ दिन बाद बिना लाठी के परिक्रमा सम्भल-सम्भल कर चल कर लगाने लगा। ४-५ दिन बाद वह भरतपुर की विशाल मण्डी का चक्कर लाठी के सहारे शीघ्र करने लगा। सातवें एवं आठवें दिन तो वह बिना लाठी के सहारे भी चलने लगा और जीने पर चढ़कर ऊपर की मन्जिल में भी जाने लगा। शब्दों के स्पष्ट उच्चारण करने में उसकी शक्ति बढ़ी। हाथ से भी कार्य करने की सामर्थ्य बढ़ी। लाठी के सहारे चलने में तो अब वह सामान्य लोगों से भी तेज चलने में समर्थ हो गया था।

वह यज्ञ के दिनों में ४ बजे प्रातः प्रति दिन ठंडे जल से स्नान करता था। अपने वस्त्रों को साबुन लगाकर धोने भी लगा। एक दिन वह अपने ऊनी कोट भी साबुन लगाकर धो रहा था। लोग उसको मना करते कि प्रातः ठंडे जल से स्नान न कर, कपड़े आदि धोने का श्रम न कर। परन्तु वह नहीं मानता था। ७ दिसम्बर को लोगों ने उससे पूछा कैसा लाभ है तो उसने कहा कि बहुत लाभ है। बहुत स्थानों पर इलाज कराया था परन्तु लाभ कुछ भी नहीं हुआ था। श्री पं. घनश्यामजी साहित्याचार्य पुरोहित आर्यसमाज नामनेर, आगरा जो इस यज्ञ में ऋत्विज थे उनने कहा पं. केदार बैठक लगा के बताओ। उसने बैठक भी लगाकर बताई तथा कहा डंड अभी नहीं लगा सकता हूं।

पूर्व यज्ञ में भी ऐसा ही लाभ

यह यज्ञ तो वृष्टि निमित्त था। रोगोपचार प्रधान कार्य नहीं था। यदि केवल रोगोपचार निमित्त ही यज्ञ होता तो उसको और भी विशेष लाभ होता। इसी प्रकार सन १९७८ में बड़ौदा आर्य कन्या महाविद्यालय के आयुर्वेद महाविद्यालय के अन्तर्गत भेषज यज्ञ मेरे द्वारा आयोजित किया गया था। वहां पर भी एक ऐसा ही

रोगी वाताघात से पीड़ित था। ७ वें दिन उसने कहा मुझे कुछ लाभ है। परन्तु वहां पूर्वोक्त सब प्रक्रिया नहीं कराई गई थी।

उपरोक्त लाभ को देखकर स्पष्ट ज्ञात होता है कि यज्ञ से आरोग्य लाभ आश्चर्यजनक रूप से सर्वाधिक रूप से अन्य चिकित्सा पद्धतियों की अपेक्षा होता है। इस केदारनाथ शर्मा रोगी के ऊपर यज्ञ के प्रभाव को देखकर – पंगुं लंघयते गिरिम् – वाक्य चरितार्थ हो रहा था।

द्वितीय रोगी

इसी प्रकार सभा मन्त्री श्री पं. हरगोविंदजी शर्मा ने दि. ३० नवम्बर, १९७९ को श्री वेदमित्रजी अवस्था ५० वर्ष ग्राम–नगला बरताई, पोस्ट सुनारी, जिला भरतपुर को भी यज्ञ में आरोग्य लाभ के हेतु उपस्थित किया।

रोग की दशा एवं याज्ञिक उपचार

इन्हें ११ वर्ष पुराना वायुरोग, श्वास का था। वर्तमान में इन्हें थोड़ा सा चलने से घबराहट होती थी, श्वास हो जाता था। ३ मास से यह अधिक उग्र था। कार्य करने में असमर्थ थे। इनका भी यज्ञ द्वारा उपरोक्त उपचार किया गया। तीनों समय यज्ञ में उन्हें बैठाया गया। नारसिंह चूर्ण और हारश्रृंगार पत्र भावित जल उन्हें नहीं दिया जाता था। यज्ञ का ही सामान्य जल दिया जाता था। ३-४ दिन में ही अपूर्व लाभ हुआ। पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगे। इनके पैर में भी दर्द था उसमें भी लाभ हुआ।

तृतीय रोगी

इसी प्रकार एक महिला को पेट दर्द की पुरानी शिकायत थी उन्हें उपरोक्त यज्ञ चिकित्सा के साथ नारसिंह चूर्ण (कालेड़ा कं. का)

यज्ञशेष घृत के साथ दिया गया। उन्हें भी प्रथम दिवस में ही लाभ होने लगा। इसी प्रकार अन्य रोगियों को भी केवल यज्ञ से लाभ प्रतीत हुए।

यज्ञ के पश्चात् यज्ञशाला में अन्य रोगियों को बैठने की अनुमति दे दी जाती थी, जिससे वे वहां प्राणायाम एवं यज्ञशेष घृत को लगाकर प्रतपन क्रिया द्वारा लाभ ले सकें।

हृदय रोगियों को यज्ञ से लाभ

इसके पूर्व भी दो बार हृदय के रोगियों पर यज्ञ का अद्भुत प्रभाव देखा गया। देवास में श्री रामचन्द्रजी सोनी को सन १९७३ में हृदय रोग का तीसरा आक्रमण हुआ था। १० दिन बाद ही उनके मामा के यहां गायत्री महायज्ञ था। डाक्टरों ने पूर्ण विश्राम की सलाह दे रखी थी, परन्तु वे यज्ञ में प्रतिदिन ५ घन्टे बैठते। ३२ दिन यज्ञ में पूर्ण भाग लिया। कुछ भी कष्ट नहीं हुआ। यज्ञ में बैठने से उन्हें उत्तरोत्तर शक्ति प्राप्त होती गई और वे अब तक स्वस्थ हैं।

इसी प्रकार सन् १९७६ में श्री बी. एन. बालासरिया, प्रेसीडेन्ट, दिग्जाम मिल्स, जामनगर वालों को हृदय रोग का आक्रमण हुआ था। एतदर्थ उनके यहां यज्ञ ८ दिवस का मैंने किया था। यज्ञ प्रातः सायं ४५-४५ मिनट का २४-२४ गायत्री मन्त्र एवं मृत्युंजय मन्त्रों से होता था। समिधा में बिल्व, पीपल, शमी, आम्र की प्रयोग की जाती थीं। गौ-घृत, शहद, अर्जुन त्वक्, अपामार्ग, अश्वगन्ध, गूगल, कपूर काचरी, तगर, अगर, जटामांसी, तुलसी के बीज, कमल गट्टा, आदि का यज्ञ में प्रयोग किया जाता था। उन्हें भी ८ दिन में ही यज्ञ द्वारा चमत्कारित अद्भुत लाभ हुआ। प्रारम्भ में उनने कहा था कि वे ५ मिनट भी बैठने में असमर्थ हैं। अन्तिम दिवस तक उनमें अपूर्व शक्ति प्राप्त हो गई और सम्पूर्ण मिल का परिभ्रमण पैदल ही किया जबकि वे सदा मोटर में ही किया करते थे।

अनेक रोगों पर यज्ञ का दृष्ट लाभ

इसी प्रकार मेधायज्ञ द्वारा बुद्धि वृद्धि के लिये श्री प्रकाशचन्द्र चौहान, इन्जीनियर इन्दौर को, आध्यात्मिक लाभ के लिए श्री हरिश्चन्द्रजी वर्मा वैदिक, मुरारोई [प. बंगाल] को, पुत्रेष्टि यज्ञ द्वारा श्री काशीरामजी ठेकेदार जोधपुर को, गूंगापन दूर होने के लिये तथा वाणी प्राप्ति के लिये कु. ज्योति सूरतवाली को, श्री यज्ञ द्वारा श्री वैद्य मुरारीलालजी भीमसेनी काजलवाले दिल्ली एवं श्री दिलीपसिंहजी आर्य पानीपत को, आरोग्य प्राप्ति, रोग निवृत्ति का लाभ श्री बाबूरामजी सण्डीला [हरदोई], श्री राजेन्द्र प्रसादजी बड़हरवा, श्री हरिश्चन्द्रजी वर्मा वैदिक आदि अनेकों को यज्ञ के लाभ हुए हैं।

यज्ञ द्वारा वृष्टि लाभ तथा आम्रवृक्ष में फल आदि

यज्ञ द्वारा वृष्टि कराने के शुभ परिणाम दिल्ली, पानीपत, जयपुर, खण्डवा, अजमेर, शाहपुरा, बिलासपुर, खरोरा [रायपुर] जालना आदि में प्राप्त हुए। फल न देने वाले आम्रवृक्ष पर फल भी आये। यज्ञ का प्रभाव कृषि आदि पर भी अद्भुत होता है।

यज्ञ चिकित्सा केन्द्रों का आयोजन हो

यज्ञ के प्रभाव से सर्व साधारण जनों को लाभान्वित करने के लिये यज्ञ चिकित्सा केन्द्र स्थापित करने तथा यज्ञ चिकित्सा शिविर लगाने की योजना क्रियान्वित होनी चाहिये जिस तरह आजकल लोग नेत्र चिकित्सा शिविर लगाते हैं तथा कृषि के लिये फार्मों व खेतों में यज्ञों का आयोजन होना चाहिये। इस प्रकार यज्ञों की उपयोगिता का प्रचार होगा और यज्ञ कार्य में सामान्य जनों की रूचि बढ़ेगी।

हमारी कतिपय रचना एवं कार्य

१. **वैदिक सम्पदा--**

वेद से वर्तमान समय की प्रमुख समस्याओं का हल ज्ञात करने के लिए इसे अवश्य पढ़ें ।

२. वैदिक वृष्टि विज्ञान लेखमाला १ से ६ पुस्तकें (सम्प्रति अप्राप्य) ।

3. Three main current Problems and their Solution through Science of yajna.

४. **प्रकाशित कतिपय सूक्त–**

श्री सूक्त-सरस्वती सूक्त-सुमंगल सूक्त-गायत्री मंत्र प्रकृति विकृति पाठ समलंकृतः-आत्मपावन सूक्त संजीवन सूक्त-

५. **अप्रकाशित रचनायें--**

वैदिक सम्पदा (अंग्रेजी अनुवाद)-वेद मंत्र संगीत स्वर लिपि युक्त-वेद कथा-याज्ञिक आचार संहिता वेद एवं शरीर विज्ञान-वैदिक वनस्पति विज्ञान यजुर्वेद क्रम संहिता - यजुर्वेद के ३१ व ४० वें अध्याय के प्रकृति विकृतिपाठ-भेषज यज्ञ चिकित्सा वृष्टि यज्ञ पद्धति-वेद साहस्त्री (१ सहस्र मंत्रों का विशेष यज्ञादि कार्य के लिये संग्रह) आदि आदि-

६. **सुपरीक्षित यज्ञकार्य**

गायत्री यज्ञ, श्रीयज्ञ, मेधायज्ञ, भेषजयज्ञ, आत्म पावन यज्ञ, पर्यावरण शोधन यज्ञ, वृष्टियज्ञादि-

७. **प्रशिक्षण एवं साधना कार्य**

स्वर सहित मन्त्राभ्यास- मंत्रों का आर्चिक गान संगीत स्वरों सहित - महावामदेव्य गान - संध्या की साधना - यज्ञों का शिक्षण आदि ।

मुद्रक : भार्गव फाईन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, महारानी रोड़, इन्दौर